सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीति अपार्टमेंट आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज

दिल्ली – ११००९२

सत्र:2026-27

कक्षा:7	विषय: हिंदी पाठ्यपुस्तक	पाठ: 8 कन्याकुमारी की यात्रा

मौखिक

क) लेखक को पर्यटन का चस्का बचपन से लग गया और जैसे-जैसे लेखक बड़े होते गए, यह रुचि बढ़ती चली गई। यह रूचि उन्हें विरासत में पिताजी से मिली थी।

ख) लेखक ने 13 जनवरी की सुबह नई दिल्ली से कर्नाटक केरल एक्सप्रेस रेलगाड़ी से यात्रा की। वे इस रेल में सवार होकर कन्याकुमारी के लिए त्रिवेंद्रम की और चल पड़े। रेल 47 घंटे में केरल की राजधानी त्रिवेंद्रम पहुँच गई।

ग) कन्याकुमारी के बाज़ार में सागर से निकलने वाली चीज़ें, जैसे- शंख, मोती, सीप आदि वस्तुओं की कई दुकानें हैं।

घ) विवेकानंद शिला मंडप कन्याकुमारी में स्थित है। समुद्र के अंदर बने इस मंडप तक पहुँचने हेतु यात्रियों को तट से शिला तक की यात्रा नाव से करनी होती है।

(लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-)

(क) लेखक के मन में सुदूर दक्षिणी तट पर स्थित त्रिसिंधु की संगम स्थली अंतरीप कन्याकुमारी की तीर्थ यात्रा की इच्छा हुई।

(ख) विवेकानंद शिला मंडप अंतरीप कन्याकुमारी के पूर्व में बंगाल की खाड़ी के अंदर एक द्वीपाकार चट्टान पर स्थित है।

(ग) समुद्री यात्रा करते समय लेखक ने बताया है कि यहाँ की नावें बड़ी-बड़ी और मुड़े हुए सिरों वाली होती हैं, जो डीज़ल से चलती हैं।

(घ) कन्याकुमारी को त्रिसिंधु की संगम स्थली इसलिए कहा जाता है क्योंकि यहाँ तीन सागर आकर मिलते हैं। इसके पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण में हिंद महासागर है।

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-)

(क) त्रिवेंद्रम केरल की राजधानी है। यहाँ से कन्याकुमारी सिर्फ़ 90 किलोमीटर दूर है। कन्याकुमारी को प्रस्थान करते समय लेखक ने मार्ग में दोनों और फलों से लदे नारियल कुंज, धान तथा गन्ने के हरे- भरे खेत, मरंतुवालमलै का पथरीला पर्वत देखा तथा शीतल समुद्री समीर के सुखद झोंकों का अनुभव लिया।

(ख) विवेकानंद शिला मंडप अंतरीप कन्याकुमारी के पूर्व में स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि यह शीला पहले पहल समुद्र से लगी हुई थी। इस पर एक देवी का मंदिर भी था कुछ लोग इस शीला को श्रीपाद शीला भी कहते हैं। सन् 1892 में स्वामी विवेकानंद देवरम्य हिमालय का दर्शन कर देश के अन्य तीर्थ का भ्रमण करते हुए अंत में कन्याकुमारी पहुँचे। जहाँ जिस शीला पर बैठकर स्वामी जी ने आत्मज्ञान प्राप्त किया था, उसे विवेकानंद शिला के नाम से याद किया जाने लगा।

(ग) कन्याकुमारी की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन करते हुए लेखक ने बताया है कि यहाँ से सागर गर्जन और सागर नर्तन का मोहक दृश्य देखते ही बनता है समुद्र के तट से कभी धीमे और कभी प्रचंड स्वर से बार-बार टकराती श्वेत गुच्छों वाली समुद्री लहरों से एक सुमधुर स्वरलहरी सुनाई देती है। साथ ही रंग- बिरंगी बालुओं से शोभित तीरभूमि, जगह-जगह बिखरी काली चट्टानें, किलोमीटरों तक दूर फैली नीलवर्ण जलराशि तथा त्रिसिंधु में यत्र- तत्र डोलती नावों को देखकर प्रकृति प्रेमी दर्शकों का हृदय प्रफुल्लित हो जाता है।

(घ) कन्याकुमारी की यात्रा में जब लेखक नाव से समुद्री यात्रा कर रहे थे तब उन्हें आनंद का संचार हुआ। त्रिसिंधु में यत्र- तत्र डोलती नव को देखकर वह बहुत प्रफुल्लित हुए। सूर्यास्त और सूर्योदय दोनों ही रूपों में सूर्य के दर्शन करते हुए उन्हें बहुत हर्ष का अनुभव हुआ। उन्होंने अपनी इस यात्रा से यह सीखा की प्रकृति की सुंदरता के सामने सब सुंदरता फीकी हैं।

पठित गद्यांश

(क) कन्याकुमारी तमिलनाडु राज्य में स्थित है।

(ख) कन्याकुमारी की आबादी लगभग पाँच से छह हजार होगी।

(ग) यहाँ का भू-भाग कुछ ऊँचाई पर स्थित है इसलिए यह स्थान आँधी- तूफान और ज्वार-भाटा में समुद्री लहरों के प्रकोप से हर तरह से सुरक्षित है।

(घ) यहाँ के बाज़ार से पर्यटक सागर से मिलने वाली शंख, मोती ,सी सीप जैसी वस्तुओं को खरीदते हैं क्योंकि इन वस्तुओं को वे सौगात के रूप में खरीदकर अपने-अपने प्रदेशों में ले जाते हैं।